BA(Hons.) PART –I , Paper- II

डॉ0 गौतम कुमार

अतिथि शिक्षक

राजनीति विज्ञान विभाग

आचार्य नरेन्द्र देव महाविद्यालय, शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

महात्मा गॉधी के सामाजिक विचार

(Social Views of Mahatma Gandhi)

गॉधीजी राजनीतिक क्षेत्र के साथ–साथ सामाजिक क्षेत्र में भी काफी कार्य किए हैं तथा सामाजिक क्षेत्र में कई विचार भी प्रकट किए हैं। गॉधीजी का मानना था कि जीवन एक सम्पूर्ण इकाई है उसे हम सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक आदि भागों में नहीं बॉट सकते हैं। वे समाज फैले सामाजिक कुरीतियों को दूर करना चाहते थे। गॉधीजी ने स्वराज आन्दोलन के साथ–साथ सामाजिक जीवन के लिए कई रचनात्मक कार्यक्रमों को भी अपनाया। महात्मा गॉधी के सामाजिक विचार निम्न प्रकार हैं –

1. **वर्ण व्यवस्था संबंधी विचार** – गॉधीजी वर्ण व्यवस्था के समर्थक थे। वे भारतीय परम्परागत समाज के चार वर्ण – ब्राहमण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र पर आधारित सामाजिक संगठन का समर्थन करते हैं। जिसमें व्यक्ति अपने वंश के अनुभवों का लाभ उठा सकते हैं अर्थात् अपने पिता के रोजगार को सीख सकता है। इससे बेरोजगारी की समस्या का समाधान होगा और समाज को कुछ कार्यो में विशेषज्ञ व्यक्ति प्राप्त हो सकेंगे। वर्णव्यवस्था पर आधारित समाज में प्रतियोगिता भी समाप्त हो जाती है। गॉधीजी के अनुसार सभी कार्य समान हैं। एक नाई का कार्य उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना कि वकील का। इसलिए सभी कार्यो के लिए समान पारिश्रमिक दिया जाना चाहिए।
2. **अस्पृश्यता का अन्त** – गॉधीजी अस्पृश्यता को भारतीय समाज के लिए कलंक मानते थे। उनका मानना था कि अस्पृश्यता समस्त समाज को नष्ट कर देगा। गॉधीजी

समाज के अछूतों को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिलाने के पक्षधर थे तथा अछूतों को स्वर्ण हिन्दुओं के समान मन्दिरों में प्रवेश तथा पूजा अराधना का अधिकार दिलाना चाहते थे। उन्होंने अछूतों में आत्मसम्मान की भावना जागृत की तथा हरिजन संघ की स्थापना की। गॉधीजी ने हरिजनों के उत्थान के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके रचनात्मक कार्यो का एक प्रमुख आधार अस्पृश्यता का उन्मूलन अथवा अन्त है।

3. **स्त्री–सुधार संबंधी विचार** – राजाराम मोहन राय के बाद स्त्री सुधार की दिशा में महात्मा गॉधी ने उल्लेखनीय कार्य किया। गॉधीजी महिलाओं के उत्थान के समर्थक थे। इसी कारण गॉधीजी ने पर्दा प्रथा, बाल विवाह का विरोध किया। गॉधीजी ने इस बात का प्रतिपादन किया कि स्त्रियों को कानून तथा व्यवहार में पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए किन्तु गॉधीजी इस बात के पक्ष में नहीं थे कि स्त्रियॉ आर्थिक दृष्टिकोण से स्वतंत्र होने का प्रयत्न करे और घर से बाहर निकलकर कार्य करे। साथ ही उनका यह भी मानना था कि यदि सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और नैतिकता आदि के दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो स्त्रियॉ पुरूषों से काफी श्रेष्ठ है।
4. **शिक्षा संबंधी विचार** – गॉधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान है। गॉधीजी भारत में प्रचलित शिक्षा पद्वति से संतुष्ट नहीं थे। गॉधीजी का कहना था कि भारत में प्रचलित रूढ़िवादिता, धर्म का प्रभाव परम्परा से चली आने वाली शिक्षा न तो व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करती है और न ही उसे व्यवहारिक बनाती है। अंग्रेजो के द्वारा चलाई गई शिक्षा पद्वति केवल उनके हित के दृष्टिकोण से पनपी, जिसमें भारतीयकरण का अभाव था। गॉधीजी के अनुसार शिक्षा का उद्वेश्य केवल साक्षरता से नहीं था। गॉधीजी के अनुसार शिक्षा तो वह है जो व्यक्ति की बुद्वि, आत्मा एवं शरीर का विकास करे। इसी दृष्टिकोण से वे शिक्षा का प्रयोग करना चाहते थे। गॉधीजी के अनुसार शिक्षा ऐसी होनी चाहिए, जिसमें बच्चे में ईमानदारी, निडरता और स्वावलम्बन उत्पन्न करे। गॉधीजी ने देश की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए नवीन शिक्षा प्रणाली को अपनाने का सुझाव दिया। नवीन शिक्षा पद्वति बुनियादी शिक्षा पद्वति के नाम से प्रचलित है। गॉधीजी शिक्षा के क्षेत्र में चरित्र निर्माण पर काफी अधिक बल दिये।

5. **<u>साम्प्रदायिक एकता</u>** – सामाजिक क्षेत्र में गॉधीजी का एक प्रमुख आर्दश भारत के सभी सम्प्रदायों को एकता के सूत्र में आवद्व करना था। गॉधीजी का कहना था कि धर्म को राष्ट्रीयता का आधार नहीं माना जा सकता। उन्होंने अन्त तक भारत के विभाजन का विरोध किया और जब भारत का विभाजन हो ही गया तो उन्होंने हिन्दू–मुस्लिम दंगों को रोकने का पूरा प्रयास किया। गॉधीजी सभी धर्मो को समान समझते थे। उन्होनें साम्प्रदायिक एकता बनाए रखने के लिए ही अपने प्राणों की अहूति दे दी।